**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# महात्मा गांधी की वैचारिक विरासत

**डॉ.रमेश चंद बैरवा**
सह आचार्य, राजनीति विज्ञान
राजकीय कला महाविद्यालय,अलवर

"मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा जिसमें गरीब से गरीब लोग भी यह महसूस करेंगे कि वह उनका देश है- जिसके निर्माण में उनकी आवाज का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा, जिसमें ऊंचे और नीचे वर्गों का भेद नहीं होगा और जिसमें विविध संप्रदायों में पूरा मेलजोल होगा। ऐसे भारत में अस्पृश्यता के या शराब और दूसरी नशीली चीजों के अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। उसमें स्त्रियों को वही अधिकार होंगे,जो पुरुषों को। चूंकि शेष सारी दुनिया के साथ हमारा संबंध शांति का होगा यानी न तो हम किसी का शोषण करेंगे और न किसी के द्वारा अपना शोषण होने देंगे,इसलिए हमारी सेना छोटी से छोटी होगी। ऐसे सब हितों का जिनका करोड़ों मूक लोगों के हितों से कोई विरोध नहीं है,पूरा सम्मान किया जाएगा, फिर वे देशी हो या विदेशी। अपने लिए तो मैं यह भी कह सकता हूं कि मैं देसी और विदेशी के फर्क से नफरत करता हूँ। यह है मेरे सपनों का भारत।... इससे भिन्न किसी चीज से मुझे संतोष नहीं होगा.

"मेरे सपनों के स्वराज में जाति (रेस) या धर्म के भेदों को कोई स्थान नहीं हो सकता। उस पर शिक्षितों या धनवानों का आधिपत्य नहीं होगा। वह स्वराज सब के लिए-सब के कल्याण के लिए होगा। सब की गिनती में किसान तो आते ही हैं किंतु लूले, लंगड़े, अंधे और भूख से मरने वाले लाखों-करोड़ों मेहनतकश मजदूर भी अवश्य आते हैं।...कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि भारतीय स्वराज्य तो ज्यादा संख्या वाले समाज का यानी हिंदुओं का ही राज्य होगा। इस मान्यता से ज्यादा बड़ी कोई दूसरी गलती नहीं हो सकती। अगर यह सही सिद्ध हो तो अपने लिए तो मैं ऐसा कह सकता हूं कि मैं उसे स्वराज मानने से इंकार कर दूंगा और अपनी सारी शक्ति लगाकर उसका विरोध करूंगा। मेरे लिए हिंद स्वराज का अर्थ सब लोगों का राज्य है,न्याय का राज्य है।" यह है गांधी के सपनों का भारत,गांधी का आइडिया ऑफ इंडिया।

गांधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। इनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नगर के काठियावाड़ में हुआ था। गांधी जी का विवाह वर्ष 1883 में कस्तूरबा से हुआ था। गांधी जी के पिता श्री करमचंद गांधी काठियावाड़ की रियासत के दीवाना थे। 10वीं क्लास तक गांधी जी की शिक्षा पोरबंदर में हुई। उसके बाद कानून की पढ़ाई के लिए उन्हें इंग्लैंड भेज दिया। 1891 में गाँधी बैरिस्टर बनकर इंडिया लौट आये,लेकिन वकालत में यहां उन्हें कोई विशेष सफलता नहीं मिली। अंततः दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी नामक व्यापारिक संस्था में दक्षिण अफ्रीका के लिए कानूनी कार्य की देखरेख के लिए गांधीजी दक्षिण अफ्रीका के डरबन शहर चले गए। दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी सन 1914 तक रहे। 1915 में इंडिया लोटे।

दक्षिण अफ्रीका का प्रवासकाल गाँधीजी के लिए राजनीतिक जीवन के लिए प्रयोगकाल सिद्ध हुआ। अफ्रीका की गोरी सरकार की रंगभेद की नीति का इन्हें निजी एहसास हुआ। अन्याय,अत्याचार और दमन के विरुद्ध अहिंसक सत्याग्रह आंदोलनों का संचालन किया। दक्षिणी अफ्रीका सत्याग्रह आंदोलन के लिए एक प्रयोगशाला सिद्ध हुआ। दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान ही गांधीजी ने 'इंडियन ओपिनियन' नामक प्रसिद्ध पत्र का प्रकाशन शुरू किया। दक्षिण अफ्रीका में ही गांधीजी ने 1909 में अपनी प्रसिद्ध रचना 'हिन्द स्वराज' की रचना की।

1915 में भारत लौटने के बाद गाँधीजी ने अहमदाबाद की सावरमती नदी के किनारे प्रसिद्ध साबरमती आश्रम की स्थापना की।आज़ादी के आंदोलन के दौरान यह आश्रम सत्याग्रहियों के लिए शरण एवं

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रशिक्षण स्थल बना। गांधी ने भारत की आज़ादी के आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। जेल भी गए। आज़ादी मिलने के बाद गांधी कांग्रेस के स्थान पर 'लोक सेवक संघ' का गठन चाहते थे। प्रार्थना सभा में जाते वक्त 30 जनवरी,1948 को नाथूराम गोडसे नामक सांप्रदायिक,हिन्दू कट्टरपंथी ने गोलियां दागकर गांधी जी की जान ले ली। गांधी जी की मृत्यु के समय महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आईंस्टीन ने कहा था कि "आगे आने वाली पीढियां शायद ही विश्वास कर सकेंगी कि उन जैसे हाड़-मांस का पुतला कभी इस भूमि पर पैदा हुआ था।"

बौद्ध धर्म के शांति एवं अहिंसा, इस्लाम धर्म के भाईचारे, श्रीमद्भगवत गीता,रामायण के अलावा गाँधीजी पर लियो टॉलस्टॉय की 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' अर्थात स्वर्ग तुम्हारे भीतर है एवं 'वार एंड पीस',हेनरी डेविड थोरो की रचना 'ऑन द ड्यूटी ऑफ सिविल डिसओबेडेन्स',जॉन रस्किन की 'अनटू दिस लास्ट',जिसका अनुवाद गांधी जी ने 'सर्वोदय' के नाम से गुजराती में किया था,से प्रमुख रूप से प्रभावित थे। गांधी जी की रचनाओं में 1909 में लिखित 'हिन्द स्वराज','सत्य के साथ मेरे प्रयोग' नाम से आत्मकथा, सर्वोदय' एवं दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' नाम से प्रमुख रचनाएं हैं। बेहतर दुनिया बनाने के लिए जीवन में संघर्ष करने वाले चुनिंदा व्यक्तियों में एक महात्मा गांधी भी थे। महात्मा गांधी ने इंडिया को एक ऐसे विशाल एवं शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से आजादी दिलाने में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई जिसके बारे में कहा जाता था कि "ब्रिटिश साम्राज्य पर सूर्यास्त नहीं होता।"

गांधीजी एक ऐसी दुनिया चाहते थे जिसमें अन्याय एवं असमानता नहीं हो। जुल्म व ज्यादती नहीं हो। हिंसा नहीं हो। युद्ध नहीं हो। हथियारों की होड़ नहीं हो। शांति एवं सद्भाव हो। सही मायने में "वसुधैव कुटुंबकम' की भावना हो। दूसरे देशों के प्रति नफरत नहीं हो अर्थात संकीर्ण राष्ट्रवाद नहीं हो। अन्तरराष्ट्रीयतावाद हो। प्रकृति संतुलन बना रहे। गांव व गरीब का विकास हो। श्रम की गरिमा हो। शिक्षा का मकसद सिर्फ केरियर निर्माण ही नहीं बल्कि चरित्र का निर्माण करना भी हो। सिर्फ साध्य ही अच्छा नहीं हो बल्कि साधन भी पवित्र होने चाहिए। राजनीति का मकसद जनसेवा हो। राजनीति में नैतिकता हो। भ्रष्टाचार व व्यभचार नहीं हो। येन केन प्रकारेण चुनाव जीतने की बुराई नहीं हो। राजनीति में धनबल व बाहुबल नहीं हो।

देखा जाए तो गांधीजी की वैचारिक विरासत आज खतरे में है,जिसकी सबसे बड़ी वजह है कारपोरेट परस्त अर्थनीति एवं विभाजन की साम्प्रदायिक राजनीति का वैचारिक गठबंधन। साथ ही बढ़ती हिंसा,बढ़ती पूंजीवादी लूट,सांप्रदायिकता एवं संकीर्ण राष्ट्रवाद,संविधान एवं लोकतंत्र पर बढ़ते हमले,पर्यावरण असंतुलन एवं तेजी से बढ़ता नैतिक पतन विशेषकर राजनीति में तेजी से बढ़ता धनबल,अपराधीकरण, दलबदल एवं भ्रष्टाचार गांधी जी के सहिष्णु व समावेशी भारत के 'आइडिया ऑफ इण्डिया' के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। यह भी गौरतलब है कि सादगी,सहजता एवं शांतिपूर्ण जीवन की गांधीवादी जीवन शैली असल में देश के शैक्षणिक परिसरों में तो दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय जे एन यू में ही ज्यादा नजर आती है।यह अलग बात है कि जे एन यू की छात्र राजनीति वैचारिक तौर पर बड़े स्तर पर मार्क्सवादी विचारधारा से ओतप्रेत है,अर्थात व्यक्तिगत जिंदगी में गांधी की सादगी और विचारधारा में वामपंथ! खैर,आज जरूरत है गांधी की वैचारिक विरासत को बचाने की।

**संदर्भ सूची:**

1. M K Gandhi, An Autobiography or The Story of my experiments with truth,Navjeevan Pub.House, Ahmedabad 1997
2. सिद्धराज ढडढा,संपादित: महात्मा गांधी,मेरे सपनो का भारत,सर्व सेवा संघ प्रकाशन,2004